



Original Article

‘आना इस देश’ उपन्यास में चित्रित समस्याएं

डॉ. मच्छिंद्र भगवान कुंभार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

भारती विद्यापीठ संचालित, मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम महाविद्यालय, कड़ेगांव

Manuscript ID:

IJAAR-C130317

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 79 - 83

Submitted: 17 Jan.2026

Revised: 24 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. मच्छिंद्र भगवान कुंभार

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785474

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785474>



Creative Commons



प्रस्तावना:

साहित्य मानवी जीवन के सशक्त व्याख्या करता है। साहित्यकार अपने साहित्य में मानवीय जीवन से संबंधित अनेक पहलुओं को उजागर करता है। जिसमें मानव जीवन जीने के लिए किए जानेवाले संघर्ष, मनुष्य की भावना और संवेदनाएं, मानव की समस्याएं, मानव की सभ्यता एवं संस्कृति, मानव की जाति-धर्म, मानव की इच्छा-आकांक्षाएं, मानव का सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ, मानव का इतिहास आदि को पाया जाता है। साहित्यकार समाज और समाज में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण करते हुए करते मनुष्य की मूल समस्याओं का उद्घाटन करता है। अतः मनुष्य की वर्तमान समस्या को उजागर करना और उसका हल खोजना यह भी साहित्यकार का साहित्य लेखन के पीछे का मूल उद्देश्य भी होता है। इस कारण आजादी के पूर्व उत्तर में हिंदी साहित्यकारों ने अपनी अपनी रचनाओं में मनुष्य की समस्याओं को बड़ी बरकाई से उजागर कर उन समस्या का हल भी खोजने का प्रयास किया है।

प्रेमचंद, लाला श्रीनिवासदास, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम राजा, यशपाल, भीष्म साहनी, भगवानदास मोरवाल, सुरेंद्र वर्मा, राजेंद्र यादव, भगवतीचरण लाल वर्मा, मोहन राकेश, संजीव आदि पुरुष साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मनुष्य की पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को वाणी दी और उन समस्याओं का हल भी ढूंढने का प्रयास किया। हिंदी साहित्यकारों में महिला साहित्यकारों का योगदान भी अतुलनीय है आधुनिक काल कृष्णा सोबती मन्नू भंडारीशिवानी मैत्री पुष्पा ममता कालिया चित्र मगडल प्रभा खेतान नासिरा शर्मा अनामिका और कृष्णा अग्निहोत्री आदि महिला साहित्यकारों ने मानव और समाज की विभिन्न समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. मच्छिंद्र भगवान कुंभार. (2026). ‘आना इस देश’ उपन्यास में चित्रित समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 79 - 83. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785474>



अतः कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी रचनाओं में मनुष्य की विभिन्न समस्याओं को वाणी देकर उसका समाधान ढूँढने की कोशिश की है। कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक काल की महिला कथाकारों में अग्रगण्य कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानी और उपन्यासों में मनुष्य के जीवन की विविध पहलुओं के माध्यम से मनुष्य जीवन की समस्याओं को बरके से अभिव्यक्त किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक कालीन स्त्रीवादी हिंदी कथाकार हैं। हिंदी कहानी और उपन्यास लेखन में उनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। कृष्णा जी ने अपने साहित्यिक जीवन में अब तक कुल सोलह उपन्यासों का सृजन किया है। जिसमें उन्होंने मानवी जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। नारी समस्या नारी के प्रति पुरुष प्रधान समाज का नजरिया, पुरुषी मानसिकता, स्त्री-पुरुष के संबंध राजनीति, जातिवाद और धर्मवाद, आतंकवाद और दहशतवाद, सीमावाद, भारत पाकिस्तान के विभाजन की त्रासदी आदि विषयों को अपने उपन्यासों के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है। ऐसा ही इनका एक प्रसिद्ध उपन्यास है - 'आना इस देश'। यह लघु उपन्यास होने के बावजूद विभिन्न समस्याओं को उजागर करनेवाला समस्या मूलक उपन्यास है। जिसमें लेखिका कृष्णा जी ने नारी समस्या, मूल्याहीनता, अन्याय-अत्याचार, शोषण, जातिवाद और धर्मवाद, सांप्रदायिकता, सीमावाद, आतंकवाद, नारी शोषण और नारी सुरक्षा की समस्या, प्रेम और मानवता की समस्या, देश के विभाजन की त्रासदी की समस्या आदि को सहजता से अभिव्यक्ति दी है।

‘आना इस देश’ उपन्यास में चित्रित समस्याएं:

‘आना इस देश’ कृष्णा अग्निहोत्री जी का यह उपन्यास मूलतः एक प्रेम कहानी है। लेकिन यह प्रेम कहानी साधारण प्रेम कहानियों से अलग है। इस प्रेम कहानी का विशेष पहलू यह है कि यह प्रेम कहानी हिंदू और मुस्लिम धर्म के दो युवक-युवतियों की कहानी है। इतना ही नहीं यह दो प्रेम करने वालों में से एक उपन्यास की नायिका पाकिस्तान की रहने वाली मुस्लिम युवती सुरैया है। तो इस उपन्यास का नायक एक भारतीय हिंदू नौजवान अबीर है। यह प्रेम कहानी इसलिए अपनी अलग पहचान रखती है कि यह प्रेम कहानी केवल जाति के बंधन को तोड़कर आगे ही नहीं निकलते बल्कि धर्म और देश की सीमाओं को तोड़कर मानवता की लकीर बनती है। कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास ‘आना इस देश’ की प्रेम कहानी अनेक समस्याओं को गहराई से अभिव्यक्त करने वाली कहानी है। यह उपन्यास केवल समस्याओं की खाई की गहराई से अभिव्यक्ति ही नहीं देता बल्कि इन समस्याओं का हल भी ढूँढता है। अतः ‘आना इस देश’ उपन्यास समस्याओं के अभिव्यक्ति के साथ उसका हल भी ढूँढता उपन्यास है। जो धार्मिक अराजकता में मानवता की मिसाल बनता है। प्रस्तुत उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने जातिवाद और धर्मवाद, सीमावाद, आतंकवाद और दहशतवाद, सांप्रदायिकता, नारीवाद, प्रेम और मूल्याहीनता आदि से संबंधित अनेक समस्याओं को उभारा है। ‘आना इस देश’ मूलतः एक प्रेम कहानी है, जो भारत के आजादी के बाद की कहानी है। जब भारत और पाकिस्तान का बंटवारा होता है और हिंदुस्तान से पाकिस्तान अलग हो जाता है। तब अंग्रेजों ने जाते समय ‘तोड़ो और राज्य करो’ की नीति के अनुसार हिंदुस्तान को दो अलग देश में विभाजित किया है। ऐसे ही आजाद भारत और हिंदुस्तान



से विभाजित पाकिस्तान की भूमि पर घटित प्रेम कहानी है। जिसकी नायिका सुरैया पाकिस्तान की एक मुस्लिम पति परित्यगता नारी है, तो नायक अबीर भारत का एक हिंदू युवक। कहानी की नायिका सुरैया की शादी परवेज खान से हो चुकी थी। परंतु उसके दानवी स्वभाव से घबराकर सुरैया अपने मायके आती हैं। उसे पिता के द्वारा प्रताड़ित करने पर अपनी खाल के साथ कराची से दुबई जाती है। दुबई में सुरैया की मुलाकात गीत से होती है। गीत से अच्छी दोस्ती होने पर सुरैया गीत के सहारे भारत आती है। जब वह अपने मां के गांव रामपुर जाती हैं। उसे रामपुर ले जाकर वापस इंदौर लाने का काम अबीर करता है। जो एक हिंदू युवक है। इसी यात्रा के दौरान दोनों में प्रेम का पल्लवन हो जाता है। दोनों के बीच में प्यार की गहराई बढ़ जाती है। परंतु अबीर की शादी मनु के साथ तय हो चुकी है, तो सुरैया पति परित्यगता मुस्लिम नारी है। दोनों एक-दूसरे के प्रति बेहद प्रेम करने के बावजूद दोनों हमेशा के लिए शादी के बंधन में नहीं बन सकें। दोनों के बीच में धर्म और जाति उभरकर खड़ी रह जाती हैं। अतः इससे लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री जी ने प्रेम की समस्या को उजागर किया है। इन दोनों की केवल जाति की नहीं बल्कि धर्म और देश भी अलग-अलग हैं। देश भी ऐसा जो हमेशा के लिए एक दूसरे के दुश्मन बने हैं। ऐसे में दोनों का प्रेम में एक होना काफी मुश्किल है। मुस्लिम धर्म में भी शिया और सुन्नी पंथों में भी मतभेद होते हैं। यह तो हिंदू और मुस्लिम, वह भी भारत और पाकिस्तान के बीच शादी और प्यार कैसे संभव है? ऐसी स्थिति में सुरैया हिंदू युवक से शादी करने की कल्पना भी नहीं कर सकती। वह एक जगह कहती है, “मेरे अब्बा सारा कुछ भूल कर गिरफ्तारी दे देंगे। पर बेटी का तो कत्ल ही कर देंगे भारत व हिंदू?”¹ हिंदू भी मुस्लिम युवतियों के साथ शादी करने के लिए राजी नहीं होते। अतः प्रेम की इस समस्या को लेखिका ने बड़ी बखूबी से उठाया है। उपन्यास में

बताया गया है कि भारत और पाकिस्तान में जो आपसी दुश्मनी है जाति-पाति और धर्म के नाम पर जो द्वेष हैं, उसे प्रेम ही मिटा सकता है। अतः दो देशों के युवाओं की प्रेम की समस्या को लेखिका ने अबीर और सुरैया के माध्यम से बताने का प्रयास किया है। उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री लिखती है-“पाकिस्तान और हिंदुस्तानी लड़के-लड़कियां एक दूसरे से मुहब्बत करने लगे, तब यह मजहब गायब हो जाएगा। क्योंकि मोहब्बत की नजर से देखा तो सब अच्छा लगता है।”²

प्रस्तुत उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री जी ने नारी की विभिन्न समस्याओं को प्रमुखता से उजागर किया है। आज भी इस पुरुष प्रधान समाज में नारियों को दोयम स्थान दिया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका सुरैया एम.ए. तक पढ़ी-लिखी सुंदर कलाकार युवति हैं। परंतु उसके पिता उसका विवाह उसे बिना पूछे उसकी दुगनी उम्र के और उसे पति की दूसरी पत्नी के रूप में कर देते हैं। परवेज की पहली पत्नी गुजर चुकी है। परवेज सामंती विचारधारा से प्रेरित दानवी और अहंकारी स्वभाव का है। उसे अपनी पत्नी के प्रति काफी ईर्ष्या है। इसी कारण वह उस पर हमेशा अत्याचार कर उसकी अवहेलना करता है। उपन्यास में वह अपनी पत्नी को धमकाते हुए कहता है-“सब समझता हूं पर इतना याद रहें, जरूरत पड़ी तो तुम्हारे चेहरे पर एसिड डलवा दूंगा।”³

अतः सुरैया अपने पति परवेज के द्वारा अत्याचारों, शोषण एवं पीड़ित नारी है। यही सुरैया आज के नारियों की समस्या उजागर करने वाली नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

आज के समाज में अपने पति को छोड़ें औरत का जीना काफी मुश्किल है। हर जगह पर उसे दबोच लेने के लिए दुष्कर्मी भेड़िए तैयार बैठे हैं। इस तरह सुरैया दुबई में अपने जीजा के इसी प्रवृत्ति का शिकार बनती है और उपन्यास के अंत में दुष्कर्मी और कामुक लोगों की। जिसमें उसे अपने प्राण भी



गंवाने पड़ते हैं। अतः सुरैय्या जैसे नारियों से जुड़ी अन्याय, अत्याचार, शोषण, सुरक्षा नारी की स्वतंत्रता, नारी की अस्मिता आदि समस्याओं को लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री जी ने वानी देने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत उपन्यास जातिभेद और धर्मभेद या धार्मिक उन्माद की समस्या को भी सामने रखता है। वर्तमान स्थिति इसी सापेक्ष हैं। आज सभी और जाति और धर्म के नाम पर बवाल मचाया जा रहा है। राजनीतिक स्वार्थी लोग इस बवाल को खड़ा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। आज राजनीति में धार्मिक उन्माद ने प्रवेश किया है। इसी धर्मवाद के कारण भारत-पाकिस्तान के बीच की दरारें दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ‘आना इस देश’ उपन्यास में इस धार्मिक और सांप्रदायिक समस्याओं को सुरैय्या और अबीर के माध्यम से उभरा है। सुरैय्या मुस्लिम और पाकिस्तान की है। वह भारतीय हिंदू युवक अबीर से प्रेम करती है। परंतु दोनों जातिवाद और धर्मवाद के कारण एक नहीं हो पाए। इस धार्मिक उन्माद की शिकार सुरैय्या होती है और उसे अपने प्राण गंवाने पड़ते हैं। अतः उपन्यास के बीच-बीच में अबीर, सुरैय्या, गीत, अर्जुन आदि की चर्चाओं में इस समस्या को प्रमुखता से उभरने का प्रयास किया है। उपन्यास का नायक अबीर इसी जातिवाद और धर्मवाद को मिटाने की बात करता है वह कहता है-“कब तक हम पाकिस्तान और हिंदुस्तानी बने रहेंगे? इंसान और हैवान तो दोनों जगह है। खूंखार दरिंदे वहां भी यहां भी! शहरों में दियाबान वहां भी यहां भी। इंसान परेशान वहां भी यहां भी। सच्चा भारतीय तो कभी हिंदू व मुसलमान का भेद नहीं करता।”⁴

‘आना इस देश’ उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने आतंकवाद और दहशतवाद की समस्या को उभारा है। मूलतः कृष्णा अग्निहोत्री जी दो देशों के विभाजन से काफी दुखी है। अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के कारण हिंदू और मुसलमान में दरारें

खड़ी की थी। जो आज दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। भारत-पाकिस्तान दोनों देशों में जाति धर्म के नाम पर आतंक फैलाया जा रहा है। खासकर के पाकिस्तान में ज्यादातर यह बात देखने को मिलती है। वह भारत को ही अपना दुश्मन मानता है और आतंकवाद और दहशतवाद फैलाकर अपनी दहशत बढ़ाना चाहता है। परंतु लेखिका इस समस्या के मूल जड़ तक जाना चाहती हैं। इस जड़ तक पहुंचाने के लिए उपन्यासकार ने अबीर और सुरैय्या की प्रेम कहानी के माध्यम बनाया और इस समस्या को प्रमुखता से प्रस्तुति दी है- “पाकिस्तान तो बंजर है। वहां बुद्धिमान सेनापति भी नहीं, इसलिए जनमत में कश्मीर जैसे अहम विषय में जहर घोला जाता है। अब पाकिस्तान भस्मासुर के अधीन है और सोचता है दूसरे देशों में आतंक फैलाकर अपना महत्व स्थापित करेगा।”⁵

प्रस्तुत उपन्यास में कृष्णा जी सामान्य लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। प्रस्तुत उपन्यास में भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के बीच धर्मवाद और सीमावाद को उभरा गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्र अबीर, सुरैय्या, अर्जुन, गीत इस बात पर हमेशा चर्चा करते हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच किस हद तक धार्मिक उन्माद बढ़ा है। जिससे आम आदमी की सुरक्षा खतरे में आ गई है। खासकर स्त्रियों की सुरक्षा के संदर्भ में प्रश्न चिन्ह है? धार्मिक उन्माद के कारण हर पल मनुष्य पर खतरा मंडरा रहा है। इसी का शिकार उपन्यास की नायिका का सुरैय्या होती है। जब वह भारत के जोधपुर रेल्वे स्टेशन से पाकिस्तान जाने निकलती है। तो धार्मिक उन्माद से बिगड़े दुष्कर्म लोग उस पर अत्याचार करते हैं। जिससे अंत में उसकी मृत्यु होती है। कृष्णा अग्निहोत्री उपन्यास में लिखती है-“अचानक रेत के उठे बबूल के कण वहां भी आ पहुंचे। सुरैय्या आंख मिलती रही कि छः-सात हाथों ने उसे जकड़ लिया और अलसाई प्यार की गोद में अंगड़ाई लेती



खूबसूरत जिस्म की मालकिन सुरैया को जिस्म पर होते कई घाव सहने पड़े और वो मूर्छित हो गई उसके कपड़े तार-तार हो गए।”⁶ इस तरह उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री जी ने विभाजन की त्रासदी की समस्या, मानवतावाद की समस्या, रूढ़ि परंपराओं की समस्या आदि को अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष :

समग्र रूप से कह सकते हैं कि कृष्णा अग्निहोत्री जी का ‘आना इस देश’ उपन्यास विभिन्न समस्याओं की गुहार लगाता है। मूलतः उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री भारत पाकिस्तान के विभाजन से काफी व्यथित हैं। इसी कारण हिंदू-मुस्लिम, भारत-पाकिस्तान, सीमावाद, नारी सुरक्षा, नारी अस्मिता, नारी के अधिकार, प्रेम, आतंकवाद और दहशतवाद, हिंदू मुस्लिम संस्कृति, राजनीति में बढ़ता धार्मिक उन्माद, आम

आदमी का अधिकार एवं सुरक्षा, वैश्विक स्तर पर अमेरिका की भूमिका आदि समस्याओं को प्रमुखता से उभरा है। प्रस्तुत उपन्यास केवल समस्याओं का यथार्थ सामने नहीं रखता बल्कि उन समस्याओं का समाधान भी प्रमुख पात्रों के माध्यम से देता है। यह उपन्यास मानवता और धार्मिक सद्भाव को उजागर कर शांति और धार्मिक समानता की मांग करता है। जो वैश्विक प्रेम को अधिक दृढ़ करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 18
2. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 46
3. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 20
4. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 43
5. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 49
6. ‘आना इस देश’, - कृष्णा अग्निहोत्री, पेज नंबर, 86